श्रीगणेशाय नमः

[torn]स्वामि

[torn]दासकृत रामायण

सुन्दरकाण्ड



तेजकुमार बुकडिपो (प्रा.) लिमिटेड

पोस्टबाक्स ८५, लखनऊ

३,०००] १९९३ [मूल्य ३)०

श्रीगोस्वामि तुलसीदासजी कृत

रामचरित मानस के प्रेमी पाठकों से

नम्र निवेदन

...कृत रामचरित मानस के सुन्दर
... संस्करण जिसका एक ऐसे
...महानुभाव ने संशोधन किया
...चरित मानस के शुद्ध पाठ के
...न में गत १२ वर्षों से संलग्न हैं। इसे
...प्रेमी सज्जनों के समक्ष प्रस्तुत करके
...र्थी हैं कि इसकी शुद्धता के सम्बन्ध में
...ी निष्पक्ष सम्मति प्रदान करें। यदि
... त्रुटि हो तो उससे भी निःसंकोच भाव
...में अवगत कराने की कृपा करें ताकि उस
... विचार पूर्ण निर्णय लिया जा सके। आप
...इस योगदान से हमें सम्पूर्ण रामचरित
...नस का शुद्ध संस्करण प्रस्तुत करने में
...साहन एवं बल प्राप्त होगा, जिसके लिए
... आपके आभारी होंगे।

निवेदक

श्रीमती कमला भार्गव द्वारा—तेजकुमार बुकडिपो,
(प्रा०) लिमिटेड
पोस्ट बाक्स नं० ८५, लखनऊ,



श्रीगणेशाय नमः ॥

❀ श्रीगोस्वामि ❀

तुलसीदासकृत रामायण

सुन्दरकाण्ड

मङ्गलाचरणम्।

श्लोक

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदम् ।
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ॥
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिम् ।
वन्देऽहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ॥ १ ॥
नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये ।
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ॥
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव ! निर्भरां मे ।
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च ॥ २ ॥
अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं ।
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ॥
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं ।
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥ ३ ॥

जामवन्त के वचन सुहाये ।
सुनि हनुमन्त हृदय अतिभाये ॥
तब लगि मोंहि परखियहु भाई ।
सहि दुख कन्दमूल फल खाई ॥
जब लगि आवउँ सीतहिं देखी ।
होइ काज मोंहि हर्ष विशेषी ॥
अस कहि नाइ सबन कहँ माथा ।
चले हरषि हिय धरि रघुनाथा ॥
सिन्धुतीर इक सुन्दर भूधर ।
कौतुक कूदि चढ़े तेहि ऊपर ॥
बारबार रघुवीर सँभारी ।
तरकेउ पवनतनय बलभारी ॥
जेहि गिरि चरण देइ हनुमन्ता ।
सो चलिजाय पताल तुरन्ता ॥
जिमि अमोघ रघुपति के बाना ।

ताही भाँति चला हनुमाना ॥
जलनिधि रघुपतिदूत विचारी ।
कह मैनाक होहु श्रमहारी ॥

सोरठा ।

सिन्धु वचन सुनि कान, तुरत उठे मैनाक तब ।
कपिकहँ कीन्ह प्रणाम, बारबार कर जोरिकरि १

दोहा ।

हनूमान तेहि परसिकरि, पुनि तेहि कीन्ह प्रणाम ।
रामकाज कीन्हे विना, मोहि कहाँ विश्राम १

जात पवनसुत देवन देखा ।
जाना चह बल बुद्धि विशेषा ॥
सुरसा नाम अहिन की माता ।
पठयउ आइ कही तेहि बाता ॥
आजु सुरन मोहि दीन्ह अहारा ।
सुनि हँसि बोला पवनकुमारा ॥
रामकाज करि फिरि मैं आवों ।

सीता की सुधि प्रभुहिं सुनावों ॥
तब तव वदन पैठिहौं आई ।
सत्य कहौं मोहिं जान दे माई ॥
कवनिहुँ यतन देहि नहिं जाना ।
ग्रससि न मोहिं कहा हनुमाना ॥
योजन भरि तेहि वदन पसारा ।
कपि तन कीन्ह दुगुन विस्तारा ॥
सोरह योजन मुख तेइँ ठयऊ ।
तुरत पवनसुत बत्तिस भयऊ ॥
जस जस सुरसा वदन बढ़ावा ।
तासु दुगुन कपि रूप दिखावा ॥
शतयोजन तेहिं आनन कीन्हा ।
अतिलघुरूप पवनसुत लीन्हा ॥
वदन पैठि पुनि बाहर आवा ।
माँगी बिदा ताहि शिर नावा ॥

मोहिं सुरन जेहि लागि पठावा।
बुधि बल मर्म्म तोर मैं पावा॥

दोहा।

रामकाज सब करिहहु, तुम बल बुद्धिनिधान।
आशिष दै सुरसा चली, हरषि चले हनुमान २

निशिचरि एक सिन्धु महँ रहई।
करि माया नभ के खग गहई॥
जीव जन्तु जे गगन उड़ाहीं।
जल विलोकि तिनकी परिछाहीं॥
गहै छाँह सक सो न उड़ाई।
यहि विधि सदा गगनचर खाई॥
सोइ छल हनूमान सन कीन्हा।
तासु कपट कपि तुरतहिं चीन्हा॥
ताहि मारि मारुतसुत वीरा।
वारिधि पार गयउ मतिधीरा॥
तहाँ जाइ देखी वनशोभा।

गुञ्जत चञ्चरीक मधु लोभा ॥
नाना तरु फल फूल सुहाये ।
खग मृग वृन्द देखि मन भाये ॥
शैल विशाल देखि एक आगे ॥
तापर कूदि चढ़ेउ भय त्यागे ॥
उमा न कछु कपि की अधिकाई ।
प्रभुप्रताप जो कालहिं खाई ॥
गिरि पर चढ़ि लङ्का तेहिं देखी ।
कहि न जाइ अतिदुर्ग विशेखी ॥
अतिउतङ्ग जलनिधि चपाहुँसा ।
कनककोटि कर परम प्रकासा ॥

छन्द ।

कनककोट विचित्रमणिकृत सुन्दरायत अतिघना ।
चौहट्ट हाट सुबाट वीथी चारु पुर बहुविधि बना ॥
गज वाजि खच्चरनिकर पदचर रथबरूथनि को गनै ।
बहुरूप निशिचरयूथ अतिबल सेन वर्णत नहिं बनै ॥

वन बाग उपवन वाटिका सर कूप वापी सोहहीं ।
नर नाग सुर गन्धर्वकन्या रूप मुनिमन मोहहीं ॥
कहुँ मल्ल देह विशाल शैलसमान अतिबल गर्जहीं ।
नाना अखारन भिरहिं बहुविधि एक एकन तर्जहीं ॥
करियतन भट कोटिन विकटतनु नगर चहुँदिशिरक्षहीं ।
कहुँमहिष मानुष धेनु खर अज खल निशाचर भक्षहीं ॥
यहि लागि तुलसीदास इनकी कथा संक्षेपहि कही ।
रघुबीर शर तीरथ शरीरन्हि त्यागि गति पइहैं सही ॥

दोहा ।

पुर रखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह विचार ।
अति लघुरूप धरौं निशि, नगर करौं पैसार ३

मशकसमान रूप कपि धरी ।
लङ्कहिं चलेउ सुमिरि नरहरी ॥
नाम लङ्किनी एक निशिचरी ।
सो कह चलेसि मोहिं निन्दरी ॥
जानसि नाहिं मर्म शठ मोरा ।
मोर अहार लङ्ककर चोरा ॥

मुष्टिक एक ताहि कपि हनी ।
रुधिर बमत धरणी ठनमनी ॥
पुनि सम्भारि उठी सो लंका ।
जोरिपाणि कर विनय सशङ्का ॥
जब रावणहिं ब्रह्म वर दीन्हा ।
चलत विरञ्चि कहा मोहिं चीन्हा ॥
विकल होसि जब कपि के मारे ।
तब जानेसि निशिचर संहारे ॥
तात मोर अति पुण्य बहूता ।
देखेउँ नयन रामकर दूता ॥

दोहा ।

सात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिय तुला एक अंग ।
तुलै न ताहि सकल मिलि, जो सुख लवसतसंग ४

प्रविशि नगर कीजै सब काजा ।
हृदय राखि कोशलपुर राजा ॥
गरल सुधा रिपु करै मिताई ।

गोपद सिन्धु अनल शितलाई ॥
गरुअ सुमेरु रेणु सम ताहीं ।
राम कृपाकरि चितवहिं जाहीं ॥
अति लघुरूप धरेउ हनुमाना ।
पैठे नगर सुमिरि भगवाना ॥
मन्दिर मन्दिर प्रति करि शोधा ।
देखे जहँ तहँ अगणित योधा ॥
गयउ दशानन मन्दिर माहीं ।
अतिविचित्र कहिजात सो नाहीं ॥
शयन किये देखा कपि तेहीं ।
मन्दिर महँ न दीख वैदेही ॥
भवन एक पुनि दीख सुहावा ।
हरिमन्दिर तहँ भिन्न बनावा ॥
रामनामअङ्कित गृह सोहा ।
बरणि न जाइ देखि मनमोहा ॥

दोहा ।

रामनामअङ्कित गृह, शोभा वरणि न जाय ।
नवतुलसी के वृन्द तहँ, देखि हर्ष कपिराय ५

लङ्का निशिचर निकर निवासा ।
इहाँ कहाँ सज्जन कर वासा ॥
मन महँ तर्क करन कपि लागे ।
ताही समय विभीषण जागे ॥
राम राम तेहिं सुमिरण कीन्हा ।
हृदय हर्ष कपि सज्जन चीन्हा ॥
यहिसन हठि करिहौं पहिचानी ।
साधु ते होइ न कारज हानी ॥
विप्ररूप धरि वचन सुनाये ।
सुनत विभीषण उठि तहँ आये ॥
करि प्रणाम पूछी कुशलाई ।
विप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥
की तुम हरिदासनमहँ कोई ।

मोरे हृदय प्रीति अति होई ॥
की तुम दीनबन्धु अनुरागी।
आयहु मोहिं करन बड़भागी ॥

दोहा।

तब हनुमन्त कही सब, राम कथा निज नाम।
सुनत युगल तन पुलक मन, मगन सुमिरि गुण ग्राम ६

सुनहु पवनसुत रहनि-हमारी।
जिमि दशननमहँ जीभ बिचारी ॥
तात कबहुँ मोहिं जानि अनाथा।
करिहहिं कृपा भानुकुलनाथा ॥
तामस तन कछु साधन नाहीं।
प्रीति न पदसरोज मनमाहीं ॥
अब मोहिं भा भरोस हनुमन्ता।
बिनु हरि कृपा मिलहिं नहिं सन्ता ॥
जो रघुवीर अनुग्रह कीन्हा।
तौ तुम मोहिं दरश हठि दीन्हा ॥

सुनहु विभीषण प्रभु की रीती ।
करहिं सदा सेवक पर प्रीती ॥
कहहु कवन मैं परमकुलीना ।
कपि चञ्चल सबही विधि हीना ॥
प्रात लेइ जो नाम हमारा ।
ता दिन ताहि न मिलै अहारा ॥

दोहा ।

अस मैं अधम सखा सुनु, मोहूँ पर रघुवीर ।
कीन्ही कृपा सुमिरि गुण, भरे विलोचन नीर ७

जानतहूँ अस स्वामि बिसारी ।
ते नर काहे न होहिं दुखारी ॥
यहिविधि कहत रामगुण ग्रामा ।
पावा अनिर्वाच्य विश्रामा ॥
पुनि सब कथा विभीषण कही ।
जेहिविधि जनकसुता जहँ रही ॥
तब हनुमन्त कहा सुनु भ्राता ।

देखा चहौं जानकी माता ॥
युवित विभीषण सकल सुनाई ।
चलेउ पवनसुत बिदा कराई ॥
धरि सोइ रूप गयउ पुनि तहँवाँ ।
बन अशोक सीता रह जहँवाँ ॥
देखि मनहिं मन कीन्ह प्रणामा ।
बैठे बीति गई निशि यामा ॥
कृशतन शीशजटा इक वेणी ।
जपति हृदय रघुपतिगुणश्रेणी ॥

दोहा ।

निजपद नयन दिये मन, रामचरण महँलीन ।
परम दुखी भा पवनसुत, निरखि जानकी दीन ८

तरुपल्लव महँ रहा लुकाई ।
करै विचार करौं का भाई ॥
तेहि अवसर रावण तहँ आवा ।
सङ्ग नारि बहु किये बनावा ॥

बहुविधि खल सीतहिं समुझावा ।
साम दाम भय भेद दिखावा ॥
कह रावण सुनु सुमुखि सयानी ।
मन्दोदरी आदि सब रानी ॥
तव अनुचरी करौं पन मोरा ।
एक बार विलोकु मम ओरा ॥
तृण धरि ओट कहति वैदेही ।
सुमिरि अवधपति परमसनेही ॥
सुनु दशमुख खद्योत प्रकासा ।
कबहुँकि नलिनी करहिं विकासा ॥
अस मन समुझहु कहत जानकी ।
खल सुधि नहिं रघुवीर बानकी ॥
शठ सूने हरिआनेसि मोहीं ।
अधम निलज्ज लाज नहिं तोहीं ॥

दोहा ।

आपुहिं सुनि खद्योत सम, रामहिं भानु समान ।
परुष वचन सुनि काढ़ि असि, बोला अति खिसिआन ॥६

सीता तैं मम कृत अपमाना ।
काटौं तव शिर कठिन कृपाना ॥
नाहित सपदि मानु मम बानी ।
सुमुखि होत नतु जीवनहानी ॥
श्यामसरोज दामसम सुन्दर ।
प्रभुभुज करिकरसम दशकन्धर ॥
सोइ भुज कण्ठ कि तव असि घोरा ।
सुनु शठ अस प्रमाणप्रण मोरा ॥
चन्द्रहास हरु मम परितापा ।
रघुपति विरह अनल सन्तापा ॥
शीतल निशि तब असि वरधारा ।
कह सीता हरु मम दुख भारा ॥
सुनत वचन पुनि मारन धावा ।
मयतनया कहि नीति बुझावा ॥
कहेसि सकल निशिचरिन्ह बुलाई ।

सीतहिं बहु विधि त्रासहु जाई ॥
मास दिवस महँ कहा न माना ।
तौ मैं मारब कठिन कृपाना ॥

दोहा ।

भवन गयउ दशकन्ध तब, इहाँ निशाचरिवृन्द ।
सीतहिं त्रास दिखावहीं, धरहिं रूप वहु मन्द १०

त्रिजटा नाम राक्षसी एका ।
रामचरण रति निपुण विवेका ॥
सबहिं बुलाय सुनायसि सपना ।
सीतहिं सेइ करो हित अपना ॥
सपने वानर लंका जारी ।
यातुधान सेना सब मारी ॥
खर आरूढ़ नगन दशशीशा ।
मुण्डितशिर खण्डित भुज बीशा ॥
यहिविधि सो दक्षिण दिशि जाई ।

लंका मनहुँ विभीषण पाई ॥
नगर फिरी रघुवीर दुहाई ।
तब प्रभु सीतहिं बोलि पठाई ॥
यह सपना मैं कहौं विचारी ।
होइहि सत्य गये दिनचारी ॥
तासु वचन सुनि ते सब डरीं ।
जनकसुता के चरणन परीं ॥

दोहा ।

जहँ तहँ गईं सकल मिलि, सीता के मन शोच ।
मास दिवस बीते मोहिं, मारिहि निशिचर पोच ११

त्रिजटासन बोलीं करजोरी ।
मातु विपतिसङ्गिनि तैं मोरी ॥
तजौं देह करु वेगि उपाई ।
दुसह विरह अब सहा न जाई ॥
आनि काठ रचु चिता बनाई ।
मातु अनल पुनि देहु लगाई ॥

सत्य करहि मम प्रीति सयानी ।
सुनै को श्रवण शूलसम बानी ॥
सुनत वचन पदगहि समुझायसि ।
प्रभुप्रताप बल सुयश सुनायसि ॥
निशि न अनल मिलु राजकुमारी ।
अस कहि सो निजभवन सिधारी ॥
कह सीता विधि भा प्रतिकूला ।
मिलै न पावक मिटै न शूला ॥
देखियत प्रकट गगन अङ्गारा ।
अवनि न आवत एकौ तारा ॥
पावकमय शशि स्रवत न आगी ।
मानहुँ मोहि जानि हतभागी ॥
सुनहु विनय मम विटप अशोका ।
सत्य नाम करु हरु मम शोका ॥
नूतन किसलय अनल समाना ।

देहु अगिनि मम करहु निदाना ॥
देखि परम विरहाकुल सीता ।
सो क्षण कपिहिं कल्पसम बीता ॥

सोरठा ।

कपि करि हृदय विचार, दीन्ह मुद्रिका डारि तब ।
जनु अशोक अङ्गार, लीन्ह हरषि उठि करगहेउ २

तब देखी मुद्रिका मनोहर ।
रामनाम अङ्कित अतिसुन्दर ॥
चकित चितै मुँदरी पहिचानी ।
हर्ष विषाद हृदय अकुलानी ॥
जीति को सकै अजय रघुराई ।
मायाते अस रची न जाई ॥
सीता मन विचार कर नाना ।
मधुर वचन बोले हनुमाना ॥
रामचन्द्र गुण वर्णन लागे ।

सुनतहिं सीता के दुख भागे ॥
लागी सुनै श्रवण मनलाई।
आदिहिं ते सब कथा सुनाई ॥
श्रवणामृत जिन कथा सुनाई।
काहे न प्रकट होत सो भाई ॥
तब हनुमन्त निकट चलिगयऊ।
फिरि बैठी मन विस्मय भयऊ ॥
रामदूत मैं मातु जानकी।
सत्य शपथ करुणानिधानकी ॥
यह मुद्रिका मातु मैं आनी।
दीन्ह राम तुमकहँ सहिदानी ॥
नर वानरहिं सङ्ग कहु कैसे।
कही कथा सङ्गति भई जैसे ॥

दोहा।

कपिके वचन सप्रेम सुनि, उपजा मन विश्वास।
जाना मन क्रम वचन यह, कृपासिन्धुकर दास १२

हरिजन जानि प्रीति अतिबाढ़ी।
सजल नयन पुलकावलि ठाढ़ी॥
बूड़त विरहजलधि हनुमाना।
भयहु तात मोकहँ जलयाना॥
अब कहु कुशल जाउँ बलिहारी।
अनुजसहित सुखभवन खरारी॥
कोमलचित कृपालु रघुराई।
कपि केहि हेतु धरी निठुराई॥
सहज बानि सेवक सुखदायक।
कबहुँक सुरति करत रघुनायक॥
कबहुँ नयन मम शीतल ताता।
होइहैं निरखि श्याम मृदु गाता॥
वचन न आव नयन भरि वारी।
अहह नाथ मोहिं निपट बिसारी॥
देखि परम विरहाकुल सीता।

बोलेउ कपि मृदु वचन विनीता ॥
मातु कशल प्रभु अनुज समेता ।
तव दुख दुखी सो कृपानिकेता ॥
जननी जनि मानहु मन ऊना ।
तुमते प्रेम राम के दूना ॥

दोहा ।

रघुपतिके सन्देश अब, सुनु जननी धरिधीर ।
असकहि कपि गदगद भयउ, भरे विलोचन नीर १३

राम कहा वियोग तव सीता ।
मोकहँ सकल भयउ विपरीता ॥
नूतन किसलय मनहुँ कृशानू ।
कालनिशासम निशि शशि भानू ॥
कुवलय विपिन कुन्तवन सरिसा ।
वारिद तप्ततेल जनु बरिसा ॥
जेहि तर रहौं करत सो पीरा ।
उरगश्वास सम त्रिविध समीरा ॥

कहेहू ते कछु दुख घटिहोई।
काहि कहौं यह जान न कोई॥
तत्त्व प्रेमकर मम अरु तोरा।
जानत प्रिया एक मन मोरा॥
सो मन रहत सदा तोहिं पाहीं।
जानु प्रीतिरस इतनेहि माहीं॥
प्रभु सन्देश सुनत वैदेही।
मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेहीं॥
कह कपि हृदय धीरधरु माता।
सुमिरि राम सेवक सुखदाता॥
उर आनहु रघुपति प्रभुताई।
सुनि मम वचन तजहु विकलाई॥

दोहा।

निशिचर निकर पतङ्गसम, रघुपति बाण कृशानु।
जननी हृदय धीर धरु, जरे निशाचर जानु १४

जो रघुवीर होत सुधि पाई।

करते नहिं विलम्ब रघुराई ॥
रामबाण रवि उदय जानकी ।
तमवरूथ कहँ यातुधानकी ॥
अबहिं मातु मैं जाउँ लिवाई ।
प्रभुआयसु नहिं राम दुहाई ॥
कछुक दिवस जननी धरु धीरा ।
कपिन सहित ऐहैं रघुवीरा ॥
निशिचर मारि तुमहिं लैजैहैं ।
तिहुँपुर नारदादि यश गैहैं ॥
हैं सुत कपि सब तुम्हहिं समाना ।
यातुधान भट अति बलवाना ॥
मोरे हृदय परम सन्देहा ।
सुनि कपि प्रकट कीन्ह निजदेहा ॥
कनकभूधराकार शरीरा ।
समर भयङ्कर अति रणधीरा ॥

सीता मन भरोस तब भयऊ ।
पुनि लघुरूप पवनसुत लयऊ ॥

दोहा ।

सुनु माता शाखामृगहिं, नहिं बल बुद्धि विशाल ।
प्रभु प्रतापत गरुणहीं, खाइ परम लघु व्याल १५

मन सन्तोष सुनत कपिबानी ।
भक्ति प्रताप तेज बल सानी ॥
आशिष दीन्ह राम प्रिय जाना ।
होहु तात बल बुद्धि निधाना ॥
अजर अमर गुणनिधि सुत होहू ।
करहिं सदा रघुनायक छोहू ॥
करहिं कृपा प्रभु अस सुनि काना ।
निर्भर प्रेम मगन हनुमाना ॥
बारबार नायउ पद शीशा ।
बोले वचन जोरिकर कीशा ॥
अब कृतकृत्य भयउँ मैं माता ।

आशिष तव अमोघ विख्याता ॥
सुनिथ मातु मोहिं अतिशय भूखा।
लागि देखि सुन्दर फल रूखा ॥
सुनु सुत करहिं विपिन रखवारी।
परम सुभट रजनीचर भारी ॥
तिनकर भय माता मोहिं नाहीं।
जो तुम सुख मानहु मनमाहीं ॥

दोहा।

देखि बुद्धिबलनिपुण कपि, कहेउ जानकी जाहु।
रघुपतिचरण हृदय धरि, तात मधुर फल खाहु १६

चलेउ नाइ शिर पैठेउ बागा।
फल खायसि तरु तोरन लागा ॥
रहे तहाँ बहु भट रखवारे।
कछु मारे कछु जाइ पुकारे ॥
नाथ एक आवा कपि भारी।
तेइ अशोकवाटिका उजारी ॥

खायेसि फल अरु विटप उपारे।
रक्षक मर्दि मर्दि महि डारे॥
सुनि रावण पठये भट नाना।
तिनहिं देखि गर्जेउ हनुमाना॥
सब रजनीचर कपि संहारे।
गये पुकारत कछु अधमारे॥
पुनि पठवा तेइ अछयकुमारा।
चला सङ्ग लै सुभट अपारा॥
आवत देखि विटप गहि तर्जा।
ताहि निपाति महाधुनि गर्जा॥

दोहा।

कछु मारेसि कछु मर्देसि, कछुक मिलायसि धूरि।
कछु पुनि जाइ पुकारे, प्रभु मर्कट बल भूरि १७

सुनि सुतबध लङ्केश रिसाना।
पठवा मेघनाद बलवाना॥
मारेसि जनि सुत बाँधेसि ताहीं।

देखौं कीश कहाँकर आही ॥
चला इन्द्रजित अतुलित योधा।
बन्धुनिधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
कपि देखा दारुण भट आवा।
कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥
अतिविशाल तरु एक उपारा।
विरथ कीन्ह लङ्केशकुमारा ॥
रहे महाभट ताके सङ्गा।
गहिगहि कपिमर्दसि निजअङ्गा ॥
तिनहिं निपाति ताहिसन बाजा।
भिरे युगल मानहुँ गजराजा ॥
मुष्टिक मारि चढ़ा तरु जाई
ताहि एकक्षण मुर्छा आई ॥
उठि बहोरि कीन्हेसि बहुमाया।
जीति न जाइ प्रभञ्जनजाया ॥

दोहा ।

ब्रह्मअस्त्र तेइँ साधेऊ, कपि मन कीन्ह विचार ।
जो न ब्रह्मशर मानऊँ, महिमा मिटै अपार १८

ब्रह्मबाण तेहि कपिकहँ मारा ।
परतिहु बार कटक संहारा ॥
तेहि जाना कपि मूर्च्छित भयऊ ।
नागपाश बाँधेसि लै गयऊ ॥
जासु नाम जपि सुनहु भवानी ।
भवबन्धन काटहिं नरज्ञानी ॥
तासु दूत बन्धनतर आवा ।
प्रभुकारज लगि आप बँधावा ॥
कपिबन्धन सुनि निशिचर धाये ।
कौतुक लागि सभा लै आये ॥
दशमुख सभा दीख कपि जाई ।
कहि न जाय कछु अतिप्रभुताई ॥
करजोरे सुर दिशिप विनीता ।

भृकुटि विलोकहिं सकल सभीता ॥
देखि प्रताप न कपिमन शङ्का ।
जिमि अहिगणमहँ गरुड़ अशङ्का ॥

दोहा ।

कपिहिं विलोकि दशानन, विहँसा कहि दुर्बाद ।
सुतबध सुरति कीन्ह पुनि, उपजा हृदय विषाद १८

कह लङ्केश कवन तैं कीशा ।
केहिके बल घालेसि वनखीशा ॥
कीधौं श्रवण सुनेसि नहिं मोहीं ।
देखौं अति अशङ्क शठ तोहीं ॥
मारेसि निशचर केहि अपराधा ।
कहु शठ तोहिं न प्राण की बाधा ॥
सुनु रावण ब्रह्माण्ड निकाया ।
पाइ जासु बल विरचति माया ॥
जाके बल विरञ्चि हरि ईशा ।
पालत हरत सृजत दशशीशा ॥

जा बल शीश धरत सहसानन ।
अण्डकोश समेत गिरि कानन ॥
धरे जो विविध देह सुरत्राता ।
तुमसे शठन सिखावनदाता ॥
हरकोदण्ड कठिन जेहि भञ्जा ।
तोहिं समेत नृपदलमद गञ्जा ॥
खर दूषण विराध अरु बाली ।
बधे सकल अतुलित बलशाली ॥

दोहा ।

जाके बल लबलेश ते, जितेउ चराचर झारि ।
तासु दूतहौं जाहि की, हरिआनेहु प्रियनारि २०

जानौं मैं तुम्हारि प्रभुताई ।
सहसबाहुसन परी लराई ॥
समर बालिसन करि यश पावा ।
सुनि कपिवचन विहँसि बहलावा ॥
खायउँ फल मोहिं लागी भूखा ।

कपिस्वभाव ते तोरेउँ रूखा ॥
सबके देह परमप्रिय स्वामी।
मारहिं मोहिं कुमारगगामी ॥
जिन मोहिं मारा तेहिं मैं मारा।
तेहिपर बाँधेउ तनय तुम्हारा ॥
मोहिं न कछु बाँधेकर लाजा।
कीन्ह चहौं निजप्रभुकर काजा ॥
विनती करौं जोरि कर रावन।
सुनहु मान तजि मोर सिखावन ॥
देखहु तुम निजहृदय विचारी।
भ्रम तजि भजहु भक्तभयहारी ॥
जाके डर अति काल डेराई।
जो सुर असुर चराचर खाई ॥
तासों बैर कबहु नहिं कीजै।
मोरे कहे जानकी दीजै ॥

दोहा ।

प्रणतपाल रघुवंशमणि, करुणासिन्धु खरारि ।
गये शरण प्रभु राखिहैं, तव अपराध बिसारि २१

रामचरणपङ्कज उर धरहू ।
लङ्का अचलराज्य तुम करहू ॥
ऋषिपुलस्त्य यश विमलमयङ्का ।
तेहि कुलमहँ जनि होसि कलङ्का ॥
रामनाम बिनु गिरा न सोहा ।
देखु विचारि त्यागि मद मोहा ॥
वसनहीन नहिं सोह सुरारी ।
सब भूषण भूषित वरनारी ॥
रामविमुख सम्पति प्रभुताई ।
जाय रही पाई बिनुपाई ॥
सजल मूल जिन्ह सरितन्ह नाहीं ।
बरषि गये पुनि तबहिं सुखाहीं ॥
सुनु दशकण्ठ कहों प्रणरोपी ।

रामविमुख त्राता नहिं कोपी ॥
शङ्कर सहस विष्णु अज तोहीं ।
सकहिं न राखि रामकर द्रोही ॥

दोहा ।

मोह मूल बहु शूलप्रद, त्यागहु तुम अभिमान ।
भजहु राम रघुनायकहिं, कृपासिन्धु भगवान २२

यदपि कही कपि अतिहित बानी ।
भक्ति विवेक विरति नय सानी ॥
बोला विहँसि अधम अभिमानी ।
मिला हमहिं कपि गुरु बड़ज्ञानी ॥
मृत्यु निकट आई खल तोहीं ।
लागेसि अधम सिखावन मोहीं ॥
उलटा होइ कहा हनुमाना ।
मतिभ्रम तोरि प्रकट मैं जाना ॥
सुनि कपिवचन बहुत रिसियाना ।
वेगि न हरहु मूढ़कर प्राना ॥

सुनत निशाचर मारन धाये ।
सचिवन सहित विभीषण आये ॥
नाइ शीश करि विनय बहूता ।
नीति विरोध न मारिय दूता ॥
आनदण्ड कछु करिय गोसाईं ।
सबहीं कहा मन्त्र भल भाई ॥
सुनत विहँसि बोला दशकन्धर ।
अङ्ग भङ्ग करि पठवहु बन्दर ॥

दोहा ।

कपिकर ममता पूँछपर, सबहिं कहा समुझाइ ।
तेलबोरि पट बाँधि पुनि, पावक देहु लगाइ २३

पूँछहीन बन्दर जब जाइहि ।
तब शठ निजनाथहि लै आइहि ॥
जिनकी कीन्हेसि अमित बड़ाई ।
देखौं मैं तिनकी प्रभुताई ॥
वचन सुनत कपि मन मुसुकाना ।

भइ सहाय शारद मैं जाना॥
यातुधान सुनि रावण वचना।
लागे रचन मूढ़ सोइ रचना॥
रहा न नगर बसन घृत तेला।
बाढ़ी पूँछ कीन्ह कपिखेला॥
कौतुक कहँ आये पुरवासी।
मारहिं चरण करहिं बहुहाँसी॥
बाजहिं ढोल देहिं सब तारी।
नगर फेरि पुनि पूँछ प्रजारी॥
पावक जरत दीख हनुमन्ता।
भयउ परम लघु रूप तुरन्ता॥
निबुकि चढ़ेउ कपि कनकअटारी।
भईं सभीत निशाचर नारी॥

दोहा।

हरि प्रेरित तेहि अवसर, चले पवन उनचास।
अट्टहास करि गरजा, कपि बढ़ि लाग अकास २४

देह विशाल परम हरुआई।
मन्दिर ते मन्दिर चढ़ि जाई॥
जरइ नगर भे लोग बिहाला।
लपटझपट बहुकोटि कराला॥
तात मात सब करहिं पुकारा।
यहि अवसर को हमहिं उबारा॥
हम जो कहा यह कपि नहिं होई।
वानर रूप धरे सुर कोई॥
साधु अवज्ञा कर फल ऐसा।
जरै नगर अनाथ कर जैसा॥
जारा नगर निमिष इकमाहीं।
एक विभीषण कर गृह नाहीं॥
जाकर भक्त अनल तेहि सिरिजा।
जरा न सो तेहि कारण गिरिजा॥
उलटि पलटि लङ्का कपिजारी।

कूदिपरा पुनि सिन्धु मँझारी ॥

दोहा ।

पूँछ बुझाई खोय श्रम, धरि लघुरूप बहोरि ।
जनकसुता के आगे, ठाढ़ भयउ करजोरि २५

मातु मोंहि दीजै कछु चीन्हा ।
जैसे रघुनायक मोंहि दीन्हा ॥
चूड़ामणि उतारि तब दयऊ ।
हर्षसमेत पवनसुत लयऊ ॥
कहेउ तात तुम मोर प्रणामा ।
सब प्रकार प्रभु पूरणकामा ॥
दीनदयाल विरद सम्भारी ।
हरहु नाथ मम सङ्कट भारी ॥
तात शक्रसुत कथा सुनायहु ।
बाणप्रताप प्रभुहिं समुझायहु ॥
मास दिवस महँ नाथ न आवहिं ।
तौं पुनि मोंहि जियत नहिं पावहिं ॥

कहु कपि केहि विधि राखौं प्राना ।
तुमहूँ तात कहत अब जाना ॥
तुमहिं देखि शीतल भइ छाती ।
पुनि मोकहँ सोइ दिन सोइ राती ॥

दोहा ।

जनकसुतहिं समुझाइ करि, बहुविधि धीरज दीन्ह ।
चरणकमल शिरनाइ कपि, गमन रामपहँ कीन्ह २६

चलत महाधुनि गर्जेउ भारी ।
गर्भस्रवहिं सुनि निशिचरनारी ॥
लाँघि सिन्धु यहि पारहिं आवा ।
शब्दकिलकिला कपिन सुनावा ॥
हरषे सब विलोकि हनुमाना ।
नूतन जन्म कपिन तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तन तेज विराजा ।
कीन्हेसि रामचन्द्रकर काजा ॥
मिले सकल अति भये सुखारी ।

तलफत मीन पाव जनु वारी ॥
चले हरषि रघुनायक पासा।
पूछत कहत नवल इतिहासा ॥
तब मधुवन भीतर सब आये।
अङ्गद सहित मधुरफल खाये ॥
रखवारे जब बरजन लागे।
मुष्टि प्रहार करत सब भागे ॥

दोहा।

जाइ पुकारे ते सकल, वन उजार युवराज।
सुनि सुग्रीवहिं हर्ष अति, करिआये प्रभुकाज २७

जो न होत सीता सुधि पाई।
मधुवन के फल सकहिं कि खाई ॥
यहिविधि मन विचार कर राजा।
आयगये कपि सहित समाजा ॥
आई सबहिं नावा पद शीशा।
मिले सबन अतिप्रेम कपीशा ॥

पूछेउ कुशल कुशलपद देखी ।
रामकृपा भा काज विशेखी ॥
नाथ काज कीन्हेउ हनुमाना ।
राखे सकल कपिन के प्राना ॥
सुनि सुग्रीव बहुरि उठि मिलेऊ ।
कपिनसहित रघुपति पहँ चलेऊ ॥
राम कपिनकहँ आवत देखा ।
किये काज मन हर्ष विशेषा ॥
फटिकशिला बैठे दोउ भाई ।
परे सकल कपि चरणन जाई ॥

दोहा ।

प्रीति सहित भेंटे सकल, रघुपति करुणापुंञ्ज ।
पूछेउ कुशल नाथ अब, कुशल देखि पदकञ्ज २८

जामवन्त कह सुनु रघुराया ।
जापर नाथ करहु तुम दाया ॥
ताहि सदा शुभ कुशल निरन्तर ।

सुर नर मुनि प्रसन्न तेहि ऊपर ॥
सो विजयी विनयी गुणसागर।
तासु सुयश तिहुँलोक उजागर ॥
प्रभुकी कृपा भयउ सब काजू।
जन्म हमार सफल भा आजू ॥
नाथ पवनसुत कीन्ह जो करणी।
सो मुखलाखहु जाइ न वरणी ॥
पवनतनय के चरित सुहाये।
जामवन्त रघुपतिहिं सुनाये ॥
सुनत कृपानिधि मन अतिभाये।
पुनि हनुमान हरषि उरलाये ॥
कहहु तात केहि भाँति जानकी।
रहति करति रक्षा स्वप्रान की ॥

दोहा।

नाम पाहरू दिवस निशि, ध्यान तुम्हार कपाट।
लोचन निजपद यन्त्रिका, प्राण जाहिं केहि बाट २६

चलत मोहिं चूड़ामणि दीन्ही ।
रघुपति हृदय लाइ तेहि लीन्ही ॥
नाथ युगललोचन भरि वारी ।
वचन कह्यो कछु जनककुमारी ॥
अनुज समेत गहेहु प्रभुचरणा ।
दीनबन्धु प्रणतारतिहरणा ॥
मन क्रम वचन चरण अनुरागी ।
केहि अपराध नाथ मोहिं त्यागी ॥
अवगुण एक मोर मैं जाना ।
बिछुरत प्राण न कीन्ह पयाना ॥
नाथ सो नयनन कर अपराधा ।
निसरत प्राण करहिं हठि बाधा ॥
विरह अनल तन तूल समीरा ।
श्वास जरै क्षणमाहिं शरीरा ॥
नयन स्रवैं जल निज हितलागी ।

जरै न पाव देह विरहागी ॥
सीताकी अति विपति विशाला ।
विनहिं कहे भल दीनदयाला ॥

दोहा ।

निमिषनिमिष करुणायतन, जाहिं कल्पसम बीति ।
वेगि चलिय प्रभु आनिये, भुजबल खलदल जीति ३०

सुनि सीतादुख प्रभु सुखअयना ।
भरिआये दोउ राजिवनयना ॥
वचन काय मन ममगति जाही ।
सपनेहुँ विपतिकि बूझिय ताही ॥
कह हनुमन्त विपति प्रभु सोई ।
जब तव सुमिरण भजन न होई ॥
केतिक बात प्रभु यातुधानकी ।
रिपुहिं जीति आनिये जानकी ॥
सुनु कपि तोहिं समान उपकारी ।
नहिं कोउ सुर नर मुनि तनधारी ॥

प्रतिउपकार करौं का तोरा ॥
सनमुख होइ न सकत मन मोरा ।
सुनु सुत तोहिं उऋण मैं नाहीं ॥
देखेउँ करि विचार मनमाहीं ।
पुनिपुनि कपिहिं चितव सुरत्राता ॥
लोचननीर पुलकि अतिगाता ।

दोहा ।

सुनि प्रभु वचन विलोकि मुख, हृदय हर्ष हनुमन्त ।
चरण परेउ प्रेममाकुल, त्राहि त्राहि भगवन्त ३१

बारबार प्रभु चहत उठावा ॥
प्रेम मगन तेहि उठब न भावा ।
प्रभुपदपङ्कज कपिकर शीशा ॥
सुमिरि सो दशा मगन गौरीशा ।
सावधान मन करि पुनि शङ्कर ॥
लागे कहन कथा अतिसुन्दर ।
कपि उठाय प्रभु हृदय लगावा ॥

करगहि परम निकट बैठावा ॥
कहु कपि रावणपालित लङ्का।
केहि विधि दहेउ दुर्ग अतिबङ्का ॥
प्रभु प्रसन्न जाना हनुमाना।
बोले वचन विगत अभिमाना ॥
शाखामृग की अति मनुसाई।
शाखा ते शाखा पर जाई ॥
लाँघि सिन्धु हाटकपुर जारा।
निशिचरगण बधि विपिन उजारा ॥
सो सब तव प्रताप रघुराई।
नाथ न कछुक मोरि प्रभुताई ॥

दोहा।

ताकहँ प्रभु कछु अगम नहिं, जापर तुम अनुकूल।
तव प्रताप बड़वानलहिं, जारि सकै खलु तूल ३२

नाथ भक्ति तव सब सुखदायिनि।
देहु कृपाकरि सो अनपायिनि ॥

सुनि प्रभु परम सरल कपिबानी ।
एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥
उमा रामस्वभाव जिन जाना ।
ताहि भजन तजि भाव न आना ॥
यह सम्वाद जासु उर आवा ।
रघुपति चरणभक्ति तेइ पावा ॥
सुनि प्रभु वचन कहैं कपिवृन्दा ।
जय जय जय कृपालु सुखकन्दा ॥
तब रघुपति कपिपतिहिं बुलावा ।
कहा चलैकर करहु बनावा ॥
अब विलम्ब केहि कारण कीजै ।
तुरत कपिनकहँ आयसु दीजै ॥
कौतुक देखि सुमन सुर वर्षें ।
नभ ते भवन चले अति हर्षें ॥

दोहा ।

कपिपति वेगि बुलायउ, आये यूथपयूथ ।
नानावरण अतुलबल, वानर भालु वरूथ ३३

प्रभु पद पङ्कज नावहिं शीशा ।
गर्जहिं भालु महाबल कीशा ॥
देखी राम सकल कपिसैना ।
चितइ कृपाकरि राजिवनैना ॥
रामकृपा बल पाइ कपिन्दा ।
भये पक्षयुत मनहुँ गिरिन्दा ॥
हरषि राम तब कीन्ह पयाना ।
शकुन भये सुन्दर शुभ नाना ॥
जासु सकल मङ्गलमय कीती ।
तासु पयान शकुन यह नीती ॥
प्रभु पयान जाना वैदेही ।
फरके बामअङ्ग शुभ तेही ॥
जो जो शकुन जानकिहिं होई ।
अशकुन भयउ रावणहि सोई ॥

चला कटक को वरणै पारा ।
गरजहिं वानर भालु अपारा ॥
नख आयुध गिरि पादपधारी ।
चले गगन महि इच्छाचारी ॥
केहरि नाद भालु कपि करहीं ।
डगमगाहिं दिग्गज चिक्करहीं ॥

छन्द ।

चिक्करहिं दिग्गज डोल महिगिरिलोलसागरखरभरे ।
मनहर्ष दिनकर सोम सुर मुनि नाग किन्नर दुख टरे ॥
कटकटहिं मर्कट विकट भट बहु कोटि कोटिन धावहीं ।
जय राम प्रबल प्रताप कोशलनाथ गुणगण गावहीं ॥
सहिसक न भार अपार अहिपति बारबार बिमोहई ।
गहि दशन पुनिपुनि कमठपीठकठोर सो किमि सोहई ॥
रघुवीर रुचिर पयान प्रस्थिति जानि परम सुहावनी ।
जनु कमठखप्पर सर्पराज सो लिखत अविचल पावनी ॥

दोहा ।

यहि विधि जाय कृपानिधि, उतरे सागर तीर ।
जहँ तहँ लागे खान फल, भालु विपुल कपिवीर ३४

उहाँ निशाचर रहहिं सशङ्का ।
जबते जारिगयउ कपि लङ्का ॥
निज निज गृह सब करहिं विचारा ।
नहिं निशिचर कुल केर उबारा ॥
जासु दूतबल वरणि न जाई ।
तेहि आये पुर कवनि भलाई ॥
दूतिन सन सुनि पुरजन बानी ।
मन्दोदरी हृदय अकुलानी ॥
रहसि जोरिकर पतिपद लागी ।
बोली वचन नीतिरस पागी ॥
कन्त कर्ष हरिसन परिहरहू ।
मोर कहा अतिहित चित धरहू ॥
समुझत जासु दूतकी करणी ।
स्रवहिं गर्भ रजनीचर घरणी ॥
तासु नारि निज सचिव बुलाई ।

पठवहु कन्त जो चहहु भलाई ॥
तव कुलकमल विपिन दुखदाई ।
सीता शीत निशा सम आई ॥
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हें ।
हित न तुम्हार शम्भु अज कीन्हें ॥

दोहा ।

रामवाण अहिगण सरिस, निकर निशाचर भेक ।
जब लगि ग्रसत न तबहिं लगि, यतन करहु तजि टेक ३५

श्रवण सुनत शठ ताकी बानी ।
बिहँसा जगतविदित अभिमानी ॥
सभय स्वभाव नारिकर साँचा ।
मङ्गल महँ भय मन अतिकाँचा ॥
जो आवै मरकट कटकाई ।
जियहिं बिचारे निशिचर खाई ॥
कम्पहिं लोकप जाके त्रासा ।
तासु नारि सभीत बड़ि हाँसा ॥

असकहि विहँसि ताहि उरलाई ।
चलेउ सभा ममता अधिकाई ॥
मन्दोदरी हृदय करि चिन्ता ।
भयो कन्त पर विधि विपरीता ॥
बैठेउ सभा खबरि अस पाई ।
सिन्धुपार सेना सब आई ॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू ।
ते सब हँसे मौन करि रहहू ॥
जितेहु सुरासुर तब श्रम नाहीं ।
नर वानर केहि लेखे माहीं ॥

दोहा ।

सचिव वैद्य गुरु तीनि जो, प्रिय बोलहिं भयआश ।
राज धर्म तन तीनकर, होइ वेगिही नाश ३६

सोइ रावण कहँ बनी सहाई ।
अस्तुति करहिं सुनाइ सुनाई ॥
अवसर जानि विभीषण आवा ।

भ्राता चरण शीश तेहि नावा ॥
पुनि शिरनाइ बैठ निजआसन ।
बोला वचन पाइ अनुशासन ॥
जो कृपालु पूछेउ मोहिं बाता ।
मति अनुरूप कहब मैं ताता ॥
जो आपन चाहउ कल्याना ।
सुयश सुमति शुभगति सुख नाना ॥
तौ परनारि लिलार गोसाँई ।
तजउ चौथिचन्दा की नाईं ॥
चौदह भुवन एक पति होई ।
भूत द्रोह तिष्ठै नहिं सोई ॥
गुणसागर नागर नर जोऊ ।
अल्पलोभ भल कहै न कोऊ ॥

दोहा ।

काम क्रोध मद लोभ सब, नाथ नरककर पन्थ ।
सब परिहरि रघुवीर पद, भजहु कहहिं सद्ग्रन्थ ३७

तात राम नहिं नर भूपाला ।
भुवनेश्वर कालहु के काला ॥
ब्रह्म अनामय अज भगवन्ता ।
व्यापक अजित अनादि अनन्ता ॥
गो द्विज धेनु देव हितकारी ।
कृपासिन्धु मानुष तन धारी ॥
जनरञ्जन भञ्जन खल व्राता ।
वेद धर्म्म रक्षक सुरत्राता ॥
ताहि वैर तजि नाइय माथा ।
प्रणतारति भञ्जन रघुनाथा ॥
देहु नाथ प्रभुकहँ वैदेही ।
भजहु राम बिनुकाम सनेही ॥
शरण गये प्रभु ताहु न त्यागा ।
विश्वद्रोहकृत अघ जेहि लागा ॥
जासु नाम त्रयताप नशावन ।

सोइ प्रभु प्रकट समुझु जिय रावन ॥

दोहा ।

बारबार पद लागऊँ, विनय करौं दशशीश ।
परिहरि मान मोह मद, भजहु कोशलाधीश ३८
मुनि पुलस्त्य निज शिष्यसन, कहि पठई यह बात ।
तुरत सो मैं तुमसन कही, पाय सुअवसर तात ३९

मालवन्त अति सचिव सयाना ।
तासु वचन सुनि अति सुख माना ॥
तात अनुज तव नीतिविभूषण ॥
सोइ उरधरहु जो कहत विभीषण ।
रिपु उतकर्ष कहत शठ दोऊ ।
दूरि न करहु इहाँ है कोऊ ॥
मालवन्त गृह गयउ बहोरी ।
कहेउ विभीषण पुनि कर जोरी ॥
सुमति कुमति सबके उर रहहीं ।
नाथ पुराण निगम अस कहहीं ॥

जहाँ सुमति तहँ सम्पति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना॥
तव उर कुमति बसी विपरीती।
हित अनहित मानहु रिपुप्रीती॥
कालरात्रि निशिचरकुलकेरी।
तेहि सीता पर प्रीति घनेरी॥

दोहा।

तात चरण गहि मागउँ, राखहु मोर दुलार।
सीता देहु रामकहँ, अतिहित होय तुम्हार ४०

बुध पुराण श्रुति सम्मति बानी।
कही विभीषण नीति बखानी॥
सुनत दशानन उठा रिसाई।
खल तोहिं मृत्यु निकट चलि आई॥
जियसि सदा शठ मोर जियावा।
रिपुकर पक्ष मूढ़ तोहिं भावा॥
कहसि न खल अस को जगमाहीं।

भुजबल जाहि जिता मैं नाहीं ॥
ममपुर बसि तपसिन पर प्रीती ।
शठ मिलु जाइ तिनहिं कहु नीती ॥
असकहि कीन्हेसि चरणप्रहारा ।
अनुज गहे पद बारहिंबारा ॥
उमा सन्त की यही बड़ाई ।
मन्द करत जो करै भलाई ॥
तुम पितुसरसि भले मोहिं मारा ।
राम भजे हित नाथ तुम्हारा ॥
सचिव सङ्गलै नभपथ गयऊ ।
सबहिं सुनाइ कहत अस भयऊ ॥

दोहा ।

राम सत्यसंकल्प प्रभु, सभा कालवश तोरि ।
मैं रघुवीर शरण अब, जाउँ देहु जनि खोरि ४१

अस कहि चला विभीषण जबहीं ।
आयुहीन भे निशिचर तबहीं ॥

साधुअवज्ञा तुरत भवानी ।
कर कल्याण अखिलकर हानी ।।
रावण जबहिं विभीषण त्यागा ।
भयउ विभव बिनु तबहिं अभागा ।।
चलेउ हरषि रघुनायकपाहीं ।
करत मनोरथ बहु मनमाहीं ।।
देखिहौं जाइ चरण जलजाता ।
अरुण मृदुल सेवक सुखदाता ।।
जे पद परसि तरी ऋषिनारी ।
दण्डक कानन पावनकारी ।।
जे पद जनकसुता उरलाये ।
कपट कुरंङ्ग सङ्ग धरिधाये ।।
हर उर सर सरोजपद जोई ।
अहोभाग्य मैं देखब सोई ।।

दोहा ।

जिन पायँन की पादुका, भरत रहे मन लाइ ।
ते पद आजु विलोकिहौं, इन नयनन अब जाइ ४२

यहि विधि करत सप्रेम विचारा।
आये सपदि सिन्धु के पारा॥
कपिन विभीषण आवत देखा।
जानेउ कोउ रिपुदूत विशेषा॥
ताहि राखि कपिपतिपहँ आये।
समाचार सब तिन्हिं सुनाये॥
कह सुग्रीव सुनहू रघुराई।
आवा मिलन दशाननभाई॥
कह प्रभु सखा बूझिये काहा।
कहै कपीश सुनहु नरनाहा॥
जानि न जाइ निशाचरमाया।
कामरूप केहि कारण आया॥
भेद हमार लेन शठ आवा।
राखिय बाँधि मोहिं असभावा॥

सखा नीति तुम नीकि विचारी ।
मम प्रण शरणागत भयहारी ॥
सुनि प्रभुवचन हर्ष हनुमाना ।
शरणागत वत्सल भगवाना ॥

दोहा ।

शरणागत कहँ जे तजहिं, निज अनहित अनुमानि ।
ते नर पामर पापमय, तिनहिं विलोकत हानि ४३

कोटि विप्रवध लागहिं जाहू ।
आये शरण तजौं नहिं ताहू ॥
सनमुख होइ जीव मोहिं जबहीं ।
जन्मकोटि अघ नाशौं तबहीं ॥
पापवन्तकर सहज स्वभाऊ ।
भजन मोर तेहि भाव न काऊ ॥
जो पै दुष्ट हृदय सो होई ।
मोरे सनमुख आव कि सोई ॥
निर्मल मन जन सो मोहिं पावा ।

मोहिं कपट छल छिद्र न भावा ॥
भेद लेन पठवा दशशीशा ।
तबहुँ न कछु भय हानि कपीशा ॥
जगमहँ सखा निशाचर जेते ।
लक्ष्मण हनहिं निमिषमहँ तेते ॥
जो सभीत आवा शरणाई ।
रखिहौं ताहि प्राणकी नाईं ॥

दोहा ।

उभय भाँति लै आवहु, हँसि कह कृपानिकेत ।
जय कृपालु कहि कपि चले, अङ्गद हनू समेत ४४

सादर तेहि आगे करि वानर ।
चले जहाँ रघुपति करुणाकर ॥
दूरिहिंते देखे दोउ भ्राता ।
नयनानन्द दान के दाता ॥
बहुरि राम छबिधाम बिलोकी ।
रहे ठिठुकि इकटक पल रोकी ॥

भुजप्रलम्ब कञ्जारुण लोचन ।
श्यामल गात प्रणत भयमोचन ॥
सिंहकन्ध आयत उरसोहा ।
आनन अमित मदनछवि मोहा ॥
नयननीर पुलकित अतिगाता ।
मन धरि धीर कही मृदु बाता ॥
नाथ दशानन कर मैं भ्राता ।
निशिचरवंश जन्म सुरत्राता ॥
सहज पापप्रिय तामस देहा ।
यथा उलूकहिं तम पर नेहा ॥

दोहा ।

श्रवण सुयश सुनिआयऊँ, प्रभु भञ्जन भवभीर ।
त्राहि त्राहि आरतिहरण, शरणसुखद रघुवीर ४५

अस कहि करत दण्डवत देखा ।
तुरत उठे प्रभु हर्ष विशेषा ॥
दीन वचन सुनि प्रभुमन भावा ।

भुज विशाल गहि हृदय लगावा ॥
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी ।
बोले वचन भक्तभयहारी ॥
कहु लङ्केश सहित परिवारा ।
कुशल कुठाहर वास तुम्हारा ॥
खलमण्डली बसहु दिन राती ।
सखा धर्म निबहै केहि भाँती ॥
मैं जानौं तुम्हारि सब रीती ।
अतिनय निपुण न भाव अनीती ॥
बरु भलवास नरककर ताता ।
दुष्टसङ्ग जनि देहिं विधाता ॥
अब पद देखि कुशल रघुराया ।
जो तुम कीन्ह जानि जन दाया ॥

दोहा ।

तबलगि कुशल न जीवकहँ, सपनेहु मन विश्राम ।
जबलगि भजत न राम कहँ, शोकधाम तजि काम ४६

तबलगि हृदय बसत खल नाना।
लोभ मोह मत्सर मद माना॥
जबलगि उर न बसत रघुनाथा।
धरे चाप शायक कटिभाथा॥
ममता तिमिर तरुण अँधियारी।
राग द्वेष उलूक सुखकारी॥
तबलगि बसत जीव मनमाहीं।
जबलगि प्रभुप्रताप रवि नाहीं॥
अब मैं कुशल मिटे भवभारे।
देखि राम पदकमल तुम्हारे॥
तुम कृपालु जापर अनुकूला।
ताहि न व्याप त्रिविध भवशूला॥
मैं निशिचर अतिअधम स्वभाऊ।
शुभआचरण कीन्ह नहिं काऊ॥
जासु रूप मुनि ध्यान न पावा।

सो प्रभु हरषि हृदय मोहिं लावा ॥

दोहा ।

अहोभाग्य मम अमित अति, रामकृपा सुखपुञ्ज ।
देखेउँ नयन विरञ्चि शिव, सेव्ययुगलपदकञ्ज ४७

सुनहु सखा निज कहहुँ स्वभाऊ ।
जान भुशुण्डि शम्भु गिरिजाऊ ॥
जो नर होइ चराचर द्रोही ।
आवै सभय शरण तकि मोहीं ॥
तजि मद मोह कपट छलनाना ।
करौं सद्य तेहिं साधु समाना ॥
जननी जनक बन्धु सुत दारा ।
तन धन भवन सुहृद परिवारा ॥
सबकै ममता ताग बटोरी ।
ममपद मनहिं बाँधि बटिडोरी ॥
समदरशी इच्छा कछु नाहीं ।
हर्ष शोक भय नहिं मनमाहीं ॥

अस सज्जन ममउर बस कैसे ।
लोभी हृदय बसत धन जैसे ॥
तुमसारिखे सन्त प्रियमोरे ।
धरौं देह नहिं आन निहोरे ॥

दोहा ।

सगुण उपासक परमहित, निरत नीति दृढ़ नेम ।
ते नर प्राणसमान मोहिं, जिनके द्विजपद प्रेम ४८

सुनु लङ्केश सकल गुण तोरे ।
ताते तुम अतिशय प्रिय मोरे ॥
रामवचन सुनि वानरयूथा ।
सकल कहहिं जय कृपावरूथा ॥
सुनत विभीषण प्रभुकी बानी ।
नहिं अघात श्रवणामृत जानी ॥
पदअम्बुज गहि बारहिबारा ।
हृदय समात न प्रेम अपारा ॥
सुनहु देव सचराचरस्वामी ।

प्रणतपाल उर अन्तरयामी ॥
उर कछु प्रथम वासना रही।
प्रभुपद प्रीति सरित सो बही ॥
अब कृपालु निजभक्ति पावनी।
देहु सदा शिवमन भावनी ॥
एवमस्तु कहि प्रभु रणधीरा।
माँगा तुरत सिन्धुकर नीरा ॥
यदपि सखा तोहिं इच्छा नाहीं।
मम दर्शन अमोघ जगमाहीं ॥
असकहि राम तिलक तेहिं सारा।
सुमनवृष्टि नभ भई अपारा ॥

दोहा।

रावण क्रोधानल सरिस, श्वास समीर प्रचण्ड।
जरत विभीषण राखेऊ, दीन्हेउ राज अखण्ड ४९
जो सम्पति शिव रावणहिं, दीन्ह दिये दशमाथ।
सोइ सम्पदा विभीषणहिं, सकुचि दीन्ह रघुनाथ ५०

अस प्रभु छाँड़ि भजहिं जे आना ।
ते नर पशु बिनु पूँछ विषाना ॥
निजजन जानि ताहि अपनावा ।
प्रभुस्वभाव कपिकुल मन भावा ॥
पुनि सर्वज्ञ सर्वउरवासी ।
सर्वरूप सबरहित उदासी ॥
बोले वचन नीतिप्रतिपालक ।
कारण मनुज दनुजकुलघालक ॥
सुनु कपीश लङ्कापति वीरा ।
केहिविधि उतरिय जलधि गँभीरा ॥
संकुल उरग मकर झषजाती ।
अतिअगाध दुस्तर सब भाँती ॥
कह लङ्केश सुनहु रघुनायक ।
कोटि सिन्धु शोषक तव शायक ॥
यद्यपि तदपि नीति अस गाई ।

विनय करिय सागरपहँ जाई ॥

दोहा ।

प्रभु तुम्हार कुलगुरु जलधि, कहहिं उपाय विचारि ।
बिनु प्रयास सागर तरहिं, सकल भालुकपिधारि ५१

सखा कह्यो तुम नीक उपाई ।
करब दैव जो होइ सहाई ॥
मन्त्र न यह लक्ष्मण मन भावा ।
रामवचन सुनि अति दुखपावा ॥
नाथ दैवकर कवन भरोसा ।
शोषिय सिन्धु करिय मन रोषा ॥
कादरमनकर एक अधारा ।
दैव दैव आलसी पुकारा ॥
सुनत विहँसि बोले रघुवीरा ।
ऐसइ करब धरहु मन धीरा ॥
असकहि प्रभु अनुजहिं समुझाई ।
सिन्धु समीप गये रघुराई ॥

प्रथम प्रणाम कीन्ह प्रभु जाई।
बैठे तट पुनि दर्भ डसाई॥
जबहिं विभीषण प्रभुपहँ आये।
पाछे रावण दूत पठाये॥

दोहा।

सकल चरित तिन्ह देखेउ, धरे कपट कपिदेह।
प्रभुगुण हृदय सराहत, शरणागत पर नेह ५२

प्रकट बखानत रामस्वभाऊ।
अतिसप्रेम गा बिसरि दुराऊ॥
रिपुके दूत कपिन जब जाने।
तिन्हहिं बाँधि कपिपतिपहँ आने॥
कह सुग्रीव सुनहु सब वनचर।
अङ्ग भङ्ग करि पठवहु निशिचर॥
सुनि सुग्रीववचन कपि धाये।
बाँधि कटक चहुँ पास फिराये॥
बहु प्रकार मारन कपि लागे।

दीन पुकारत तदपि न त्यागे ॥
जो हमार हर नासा काना।
तेहि कोशलाधीश कर आना ॥
सुनि लक्ष्मण तब निकट बुलाये।
दया लागि हँसि तुरत छुड़ाये ॥
रावणकर दीन्हेउ यह पाती।
लक्ष्मणवचन बाँचु कुलघाती ॥

दोहा।

कहेउ मुखागर मूढ़सन, मम सन्देश उदार।
सीता देइ मिलहु नतु, आवा काल तुम्हार ५३

तुरत नाइ लक्ष्मणपद माथा।
चले दूत वरणत गुणगाथा ॥
कहत रामयश लङ्कहिं आये।
रावणचरण शीश तिन नाये ॥
बिहँसि दशानन पूछेसि बाता।
कहसि न शुक आपनि कुशलाता ॥

पुनि कहु कुशल विभीषण केरी ।
जासु मृत्यु आई अतिनेरी ।।
करत राज लङ्का शठ त्यागा ।
होइहि यवकर कीट अभागा ।।
पुनि कहु भालु कीश कटकाई ।
कठिन काल प्रेरित चलिआई ।।
जिनके जीवनकर रखवारा ।
भयउ मृदुलचित सिन्धु बिचारा ।।
कहु तपसिनकै बात बहोरी ।
जिनके हृदय त्रास अति मोरी ।।

दोहा ।

की भई भेंट कि फिरिगये, श्रवण सुयश सुनि मोर ।
कहसि न रिपुदल तेज बल, बहुतचकित चित तोर ५४

नाथ कृपाकरि पूछेहु जैसे ।
मानहु कहा क्रोध तजि तैसे ।।
मिला जाइ जब अनुज तुम्हारा ।

जातहिं राम तिलक तेहिं सारा ॥
रावणदूत हमहिं सुनि काना ।
कपिन बाँधि दीन्हे दुख नाना ॥
श्रवण नासिका काटन लागे ।
रामशपथ दीन्ही तब त्यागे ॥
पूछेहु नाथ कीशकटकाई ।
वदन कोटि शत वरणि न जाई ।
नाना वरण भालु कपि धारी ।
विकटानन विशाल भयकारी ॥
जेहि पुर दहेउ बधेउ सुत तोरा ।
सकल कपिनमहँ तेहि बल थोरा ॥
अमित नाम भट कठिन कराला ।
अमित नागबल विपुल विशाला ॥

दोहा ।

द्विविद मयन्दरु नील नल, अङ्गदादि विकटाशि ।
दधि मुख केहरि कुमुद गव, जामवन्त बलराशि ५५

ये कपि सब सुग्रीव समाना।
इनसम कोटि गनै को नाना॥
राम कृपा अतुलित बल तिनहीं।
तृण समान त्रयलोकहि गिनहीं॥
अस मैं श्रवण सुना दशकन्धर।
पद्म अठारह यूथप बन्दर॥
नाथ कटकमहँ सो कपि नाहीं।
जो न तुम्हिं जीतै रणमाहीं॥
परमक्रोध मींजहिं सब हाथा।
आयसु पै न देहिं रघुनाथा॥
शोषहिं सिन्धु सरित झष व्याला।
फारहिं नखधरि कुधर विशाला॥
मर्दि गर्द मिलवहिं दशशीशा।
ऐसे वचन कहहिं सब कीशा॥
गर्जहिं तर्जहिं सहज अशङ्का।

मानहुँ ग्रसन चहत अब लङ्का ॥

दोहा ।

सहज शूर कपि भालु सब, पुनि शिरपर श्रीराम ।
रावण कोटिन काल कहँ, जीति सकहिं संग्राम ५६

राम तेज बल बुधि विपुलाई ।
शेष सहस शत सकहिं न गाई ॥
सक शर एक शोषि शत सागर ।
तव भ्रातहिं पूछेउ नयनागर ॥
तासु वचन सुनि सागर पाहीं ।
माँगत पन्थ कृपा मनमाहीं ॥
सुनत वचन विहँसा दशशीशा ।
जो अस मति सहायकृत कीशा ॥
सहज भीरु कर वचन दृढ़ाई ।
सागरसन ठानी मचलाई ॥
मूढ़ मृषा का करसि बड़ाई ।
रिपु बल बुद्धि थाह मैं पाई ॥

सचिव सभीत विभीषण जाके ।
विजय विभूति कहाँलगि ताके ॥
सुनि खलवचन दूत रिस बाढ़ी ।
समय विचारि पत्रिका काढ़ी ॥
रामअनुज दीन्हीं यह पाती ।
नाथ बँचाइ जुड़ावहु छाती ॥
बिहँसि वाम कर लीन्हेसि रावन ।
सचिव बोलि शठ लाग बँचावन ॥

दोहा ।

बातन मनहिं रिझाय शठ, जनि घालसिकुल खीश ।
राम विरोध न उबरिहहु, शरण विष्णु अज ईश५७
होहु मान तजिअनुज इव, प्रभु पदपङ्कज भृङ्ग ।
होहि रामशर अनल खल, जनि कुलसहित पतङ्ग५८

सुनत सभय मनमहँ मुसुकाई ।
कहत दशानन सबहिं सुनाई ॥
भूमि परा कर गहत अकासा ।

लघुतापस कर वाकविलासा ॥
कह शुक नाथ सत्य सब बानी।
समुझहु छाड़ि प्रकृति अभिमानी ॥
सुनहु वचन मम परिहरि क्रोधा।
नाथ रामसन तजहु विरोधा ॥
अतिकोमल रघुवीर स्वभाऊ।
यद्यपि अखिल लोक कर राऊ ॥
मिलत कृपा प्रभु तुम पर करिहैं।
उर अपराध न एकौ धरिहैं ॥
जनकसुता रघुनाथहिं दीजै।
इतना कहा मोर प्रभु कीजै ॥
जब तेइ देन कहेउ वैदेही।
चरणप्रहार कीन्ह शठ तेहीं ॥
चरणनाइ शिर चला सो तहाँ।
कृपासिन्धु रघुनायक जहाँ ॥

करि प्रणाम निजकथा सुनाई।
रामकृपा आपनि गति पाई॥
ऋषि अगस्त्यकर शाप भवानी।
राक्षस भयउ रहा मुनि ज्ञानी॥
वन्दि रामपद बारहिं बारा।
पुनि निज आश्रमकहँ पगधारा॥

दोहा।

विनय न मानत जलधि जड़, गये तीनि दिनबीति।
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होय न प्रीति५९
लक्ष्मण बाण शरासन आनू।
शोषौं वारिधि विशिष कृशानू॥
शठसन विनय कुटिलसन प्रीती।
सहज कृपिणसन सुन्दर नीती॥
ममतारतसन ज्ञान कहानी।
अतिलोभीसन विरति बखानी॥
क्रोधिहिं शम कामिहिं हरि कथा।

ऊसर बीज बये फल यथा ॥
अस कहि रघुपति चाप चढ़ावा।
यह मत लक्ष्मण के मन भावा ॥
सन्धानेउ प्रभु विशिष कराला।
उठी उदधिउर अन्तर ज्वाला ॥
मकर उरग झषगण अकुलाने।
जरत जन्तु जलनिधि जब जाने ॥
कनकथार भरि मणिगण नाना।
विप्ररूप आयउ तजि माना ॥

दोहा।

काटे पै कदली फरै, कोटि यतन करि सींच।
विनय न मान खगेश सुनु, डाटेहिं पै नव नीच ६०

सभय सिन्धु गहि पद प्रभु केरे।
क्षमहु नाथ सब अवगुण मेरे ॥
गगन समीर अनल जलधरणी।
इनकी नाथ सहज जड़करणी ॥

तव प्रेरित माया उपजाये।
सृष्टि हेतु सब ग्रन्थन गाये॥
प्रभु आयसु जेहिकहँ जस अहही।
सो तेहि भाँति रहे सुख लहही॥
प्रभु भल कीन्ह मोहिंसिख दीन्हीं।
मर्यादा पुनि तुम्हरी कीन्हीं॥
ढोल गँवार शूद्र पशु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी॥
प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई।
उतरहिं कटक न मोरि बड़ाई॥
प्रभुआज्ञा अपेल श्रुति गाई।
करहु वेगि जो तुमहिं सुहाई॥

दोहा।

सुनत विनीत वचन अति, कह कृपालु मुसुकाय।
जेहिविधि उतरै कपिकटक, तातसोकहहु उपाय६१

नाथ नील नल कपि दोउ भाई।

लरिकाइँ ऋषिआशिष पाई ॥
तिनके परस किये गिरिभारे।
तरिहहिं जलधि प्रताप तुम्हारे ॥
मैं पुनि उरधरि प्रभु प्रभुताई।
करिहौं बल अनुमान सहाई ॥
यहि विधि नाथ पयोधि बँधाइय।
जेहि यह सुयश लोकतिहुँ गाइय ॥
यहि शर मम उत्तरतट वासी।
हतहु नाथ खलगण अघरासी ॥
सुनि कृपालु सागरमनपीरा।
तुरतहिं हरी राम रणधीरा ॥
देखि रामबल अतुलितभारी।
हरषि पयोनिधि भयो सुखारी ॥
सकल चरित कहि प्रभुहिं सुनावा।
चरणवन्दि पाथोधि सिधावा ॥

छन्द ।

निजभवन गमनेउ सिन्धु श्रीरघुपतिहिंयहमतभायऊ ।
यहचरित कलिमल हरणजसमति दासतुलसी गायऊ ॥
सुखभवन संशयशमन दमनविषाद रघुपति गुणगना ।
तजि सकलआशभरोसगावहिंसुनहिंसज्जनशुचिमना ॥

दोहा ।

सकल सुमङ्गलदायक, रघुनायक गुणगान ।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव, सिन्धु विना जलयान ६२

इति श्रीरामचरितमानसे सकल कलिकलुषविध्वंसने
सुन्दरकाण्डे विमलवैराग्यसम्पादनो नाम
पञ्चमस्सोपनः ॥ ५ ॥





श्रीमती कमला भार्गव द्वारा–तेजकुमार
प्रेस (प्रा०) लि०, लखनऊ में मुद्रित।